सतीनाथ षडंगी

अनारको
उसका छल्ला और लोहे का कारखाना

अनारको को इतना याद है कि उसकी नींद टूट गई थी। और उसका हाथ लोहे के छल्ले पर पड़ा था। यह छल्ला पिछली शाम ही तो सड़क पर पड़ा मिला था। जब वो स्कूल से आ रही थी तब। छल्ला थोड़ा गन्दा-सा था। पर उससे क्या होता है? अनारको ने उसे उठाकर अपनी कमीज़ की जेब में रख लिया। छल्ला जेब से निकलकर बिस्तर पर आ गया होगा।

अनारको ने छुआ तो उसे अच्छा लगा। मीठी-मीठी ठण्डी-ठण्डी उसकी छुअन। बीच में बने छेद से हथेली का थोड़ा हिस्सा बिस्तर को छूता था तो गुदगुदी-सी लगती थी वहाँ।

अनारको इस छुअन में मशगूल ही थी कि छल्ला खड़ा होकर लुढ़कने लगा। बिस्तर से छलाँग मारकर फर्श पर आ गया। फिर लुढ़कते हुए पिछवाड़े के दरवाज़े की तरफ गया। अनारको को पहले तो यह सब कुछ अजीब लगा फिर वह भी छल्ले के पीछे हो ली। दरवाज़े के पास खिड़की से आती चाँदनी में जैसे कि एक बड़ी मुस्कान हो। अनारको ने दरवाज़ा खोला फिर छल्ले के पीछे-पीछे हो ली।

सेमल के एक पेड़ के नीचे से जाते हुए छल्ले के सिर में उड़ती हुई रुई फँस गई। इससे उसकी चाल डगमगा गई। चलते हुए अनारको

ने सोचा कि छल्ले का चलना भी कितना अजीब है। कभी सिर पैर हो जाता है और अगले ही पल पैर सिर हो जाता है। और ऐसे ही सिर-पैर पैर-सर करता हुआ लुढ़कता-डगमगाता हुआ चलता है छल्ला। खैर, उसने छल्ले के सिर या अब पैर से रुई छुड़ाई और फूँककर उस रुई को उड़ा दिया।

तेज़-तेज़ लुढ़कते हुए छल्ला एक ऊँची दीवार के पास आ गया। दीवार के उस पार क्या था बता नहीं सकते थे। पर दीवारों के ऊपर बन्दूक थामे संतरी ज़रूर दिखते थे। लोहे के बड़े दरवाज़े के ऊपर लिखा था "लोहे का कारखाना"। दरवाज़े से न जाकर छल्ला दीवार के नीचे बने छेद से अन्दर दाखिल हुआ। पीछे-पीछे अनारको।

दोनों एक ऊँची छत वाले बड़े-से मकान में पहुँच गए। ऊपर की छत टीन की चादरों की बनी थी। और अन्दर बहुत शोर मच रहा था। धम्म-धम्म की आवाज़ यूँ आती थी जैसे कोई डायनासौर तेज़-तेज़ भाग रहा हो। चारों तरफ बहुत सारे लोग खूब सारा हल्ला मचा रहे थे।

इस सारे हल्ले के बीच अनारको ने देखा कि एक तरफ कुछ लोग चिमटे से लोहे की मोटी-मोटी चादरों को लोहे की लम्बी बेंच पर खींचकर एक मशीन के नीचे ला रहे थे। बेंच के ऊपर पहिए लगे थे। फिर भी चादर को खींचने में काफी ताकत लगाना पड़ती थी। एक के पीछे एक लोग चादरों को लाते जाते और उस बड़ी-सी मशीन के मुँह में डालते जाते। अनारको और पास गई तो उसे चादरों की गर्मी का अहसास हुआ। सो वो ज़रा पीछे हट गई। अनारको ने देखा चादरें जिस मशीन के अन्दर जातीं वहाँ बटन दबाते ही ऊपर से चमकती हुई छड़ें निकलतीं। और चादर को दबाते हुए नीचे निकल जाती थीं। फिर क्या पूरी चादर में गोल-गोल छेद हो जाते। और उस मशीन के नीचे से छल्ले ही छल्ले निकलते थे। फिर कुछ लोग उस छेद वाली चादर को हटाकर अलग कर देते थे। और कुछ छल्लों को एक तरफ इकट्ठा करते जाते थे। ऐसा ही चलता रहता था। बार-बार, लगातार।

अनारको यह सब देख ही रही थी कि उसे छल्ले का ख्याल आया। इधर-उधर देखा तो पाया कि दूर कोने में छल्ला खूब सारे नए छल्लों के साथ बतिया रहा था। अनारको समझ गई कि वह उन्हें बाहर की दुनिया के बारे में बता रहा था। अनारको को भी बात करनी थी। क्योंकि उसकी सोच में काँटा लग गया था। उसने वहाँ काम कर रहे एक आदमी से पूछा, "क्यों आप सुबह से शाम तक एक ही काम बार-बार कर के थक नहीं जाते हो?" "जब हिन्दी के मासाब मुझे बोर्ड पर पचास बार 'आगे से क्लास में नहीं हँसूँगी' लिखने को कहते हैं तो दस बार लिखने के बाद ही मैं थक जाती हूँ।" "थक तो जाती हो," उस आदमी ने कहा, "पर लिखती तो पूरे पचास बार ही हो ना?"

अनारको कुछ आगे बोलती या पूछती तभी छल्ला लुढ़कने लगा। अनारको इसके पीछे भाग चली। अब वे वहाँ पहुँचे जहाँ वैसा ही टीन की छत वाला ऊँचा मकान था। छल्ला जिस तरह

कभी इधर कभी उधर जा रहा था, कोई भी समझ लेता कि वह यहाँ कभी नहीं आया था। यहाँ भी खूब हो-हल्ला था। और अनारको ने इसी हो-हल्ले के बीच पूरे कारखाने का जायज़ा ले लिया। अनारको न देखा इस कारखाने में सब कुछ वैसा ही हो रहा था जैसे अम्मी रोटी बेलती है, पर सब कुछ बड़े पैमाने पर।

एक तरफ लाल गर्म – पहाड़ के पीछे के सूरज जैसा लाल गर्म – लोहे के खम्बे छोटी-छोटी गाड़ियों पर लगी एक भारी मशीन में जाते थे। मशीन में रोटी के बेलन जैसे ऊपर-नीचे लोहे के बेलन घूमते जाते थे। एक तरफ से लाल गर्म खम्बे जाते दूसरी तरफ से लोहे की पतली चादरें निकलती थीं। और सब कुछ खूब धुआँ, भाप, गर्मी और शोर के बीच होता जाता था। बार-बार एक के बाद एक लगातार।

मशीनों के साथ-साथ वहाँ भी बहुत सारे लोग थे। कुछ हट्टे-कट्टे कुछ दुबले-पतले। और सबके सब पसीने से तरबतर। अनारको ने सोचा ऐसे ही पसीना बहते-बहते कोई आदमी पूरा का पूरा पसीना बन जाए। और बस इत्ता-सा पसीना रह जाए। और पसीने में उस आदमी की बू रह जाए।

अनारको ने देखा लोग गर्म खम्बों की गाड़ियाँ धकेल रहे थे। कई मशीन चला रहे थे। कई कुछ मरम्मत का काम कर रहे थे। पसीने में भीगे हाथ ज़ोर लगाते हाथ समन्दर की लहरों जैसे उठते गिरते हाथ।

तभी उसके कँधे पर मम्मी का हाथ पड़ा। अनारको जाग गई। आँख खोली तो देखा तकिया के दूसरे सिरे पर बिल्कुल तकिए से सटकर छल्ला पड़ा था। उसने हाथ बढ़ाकर छल्ले को छुआ। उसे महसूस हुआ जैसे वह हज़ारों हाथों को छू रही हो। उसका मन इतना मस्त हो गया कि उसने अम्मी से पाँच मिनट और सोने वाली लड़ाई भी नहीं लड़ी। चक चक

एक कहानी, बोदा रानी
गल्ला चोर, खींचे डोर
बाजे पुंगी, नाचे मोर

प्रस्तुति - मनोज साहू